International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.newresearchjournal.com/academic
Volume 1; Issue 4; April 2016; Page No. 45-49

चन्द्रकुमार अगरवाला की काव्य चेतना का अनुशीलन (असमीया रोमांटिक साहित्य के विशेष सन्दर्भ में)

जयन्त कुमार बोरो

अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेज, कोकराझार, असम।

सारांश:

असमीया साहित्य में रोमामंटिक युग का प्रारम्भ सन् 1889 में प्रकाशित 'जोनकी' 1 पत्रिका के साधारणतः माना जाता है। रोमान्टिक युग या 'रोमान्टिस्जिम' 2 को असमीया साहित्य में एक साहित्यिक आन्दोलन के रुप में देखा गया। असम में इस युग को नवजागरण की संज्ञा के अभिहित किया गया। इस आन्दोलन का श्रीगणेश 'असमीया भाषा उन्नति साधिनी सभा' से होता है। उन्नीसवीं शताब्दी के अस्सी के दशक में कलकत्ता में अध्ययनरत असमीया छात्रों ने इस सभा को जन्म दिया। प्रारम्भ में यह सभा उन छात्रों के मेल मिलाप करने के लिए प्रति शनिवार को आयोजित होने वाली एक साधारण सभा थी। कलकत्ता में आये हुये असम के सभी विद्यार्थी एक साथ सम्मिलित होकर मेल-मिलाप करते थे। 25 अगस्त, सन् 1888 में कलकत्ता में शहर के मध्य 'अ. भा. उ. सा. स.' के नाम से एक विख्यात युगान्तकारी सभा का निर्माण किया। सभा के कम से कम बीस छात्रों के एक दल ने असमीया साहित्य में नवजागरण का चादर फैलाया। चन्द्रकुमार अगरवाला, हेमचन्द्र गोस्वामी और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा इस दल के तीन प्रधान छात्र थे। इन तीनों छात्रों के अथक प्रयसों से ही सन् 1889 के जनवरी महीने में 'जोनाकी' नामक असमीया पत्रिका का प्रकाशन हुआ। चन्द्रकुमार अरगवाला ने असमीया में अंग्रेजी रोमान्टिक भावधारा को प्रवाहित कर असमीया साहित्य में नवीन चेतना को विकसित किया। जिसका परिणाम उसके समकालीन और परवर्ती साहित्यकारों तथा कवियों में स्पष्ट रुप से देखने को मिलता है।

मूल शब्द: जोनाकी युग, रोमान्टिस्जिम, नवजागरण आदि।

प्रस्तावना:

असमीया साहित्य के इतिहास में रोमांटिक युग का अपना एक विशिष्ट महत्व रहा हैं। रोमान्टिक साहित्य मूलतः कविता पर आधारित है। कविता ही इस धारा के पक्ष में प्रवल रुप में प्रवाहित रही थी। इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि इस युग में साहित्य की अन्य विधाओं में जैसे लघुकथा, उपन्यास, नाटक आदि में इसका प्रभाव नहीं पड़ा। रोमान्टिक साहित्य की क्रिया और प्रतिक्रिया कमोवेश साहित्य का लगभग सभी विधाओं में परिलक्षित होता है। किन्तु कविता के क्षेत्र में इसका सफल रुप अधिक दिखाई पड़ता है। असमीया साहित्य की अन्य विधाओं पर लेखन कार्य तथा आधुनिक कला-कौशल रोमान्टिक युग से ही प्रारम्भ होता है। इस युग के पूर्व असमीया साहित्य में मध्य युग का समय रहा, जिसके केन्द्र में वैष्णव धर्म था। परवर्ती असमीया साहित्य में एक और युग परिलक्षित होता है जिसे 'अरुणोदय युग' के नाम से जाना जाता है। इस युग ने ईसाई धर्म का प्रचार पथ को छोड़कर सच्चे अर्थों में एक धर्म-निरपेक्ष परम्परा को स्थापित करने का प्रयास किया। रोमान्टिक युग ने असमीया साहित्य को एक नवीन पथ का प्रदर्शन किया। असमीया साहित्य में अरुणोदय युग का प्राभ्म मध्ययुग के बाद होता है। इस में ईसाई मिसनेरियों ने धर्म के विस्तार के लिए आधुनिक साहित्य का प्रकाशन करने लगे थें। इस युग में सन् 1846 ई. में प्रथम असमीया अखबार का प्रकाशन हुआ। और इसी के साथ इस युग का नामकरण अरुणोदय रखा गया। इस युग की समय सीमा असमीया साहित्य के रोमान्टिक युग के प्रारम्भ तक माना जाता है। इसी समय से ही असमीया साहित्य का आधुनिक युग माना जाता है।

उद्देश्य:

प्रस्तुत आलेख के माध्यम से यह स्पष्ट करना है कि असमीया साहित्य में रोमान्टिक काव्यधारा की एक लम्बी अवधि तक प्रवाहित रही है। लगभग पचास वर्ष (1889-1940) की एक लम्बी अवधि को असमीया साहित्य जगत में रोमान्टिक युग के नाम से जाना गया। यानि की पाँच दशकों तक रोमान्टिक कविता धारा को असमीया काव्य में देखने को मिलता रहा हैं। हिन्दी साहित्य में रोमान्टिक युग का सन् 1920 ई. से सन् 1936 ई. के कालावधि को माना गया। असमीया रोमान्टिक काव्य धारा में त्रिमूर्ति कवियों (चन्द्रकुमार अगरवाला, हेमचन्द्र गोस्वामी और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा) का एक सुमधुर संगम रहा है। इस युग में 'जोनाकी', 'बाँही' नामक युगान्तकारी पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। ठीक इसी भाँति हिन्दी साहित्य के रोमांटिक युग में चार कवियों जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आदि का आविर्भाव हुआ। जिसे हिन्दी छायावाद के चार स्तम्भ भी कहाँ जाता है। असमीया साहित्य के रोमान्टिक काव्यों को हिन्दी के साथ जोड़कर देखा जाए मणिकांचन योग बनता। अतः अभिप्राय यही है कि असमीया रोमान्टिक काव्य अपने आप में विशिष्ट है। इसका अध्ययन आज भी अपेक्षित है।

शोध विधि:

प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विशलेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है तथा यह विषय समीक्षात्मकता पद्धति की भी मांग रखता है। प्रस्तुत आलेक के विषय को हिन्दी के छायावादी काव्य धारा के कवि की कविताओं के साथ तुलनात्मक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जा सकता है।

शोध सामाग्री:

प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। असमीया साहित्य के विविध ग्रन्थों में से आलेख को पुरा करने के लिए काफी मद्द मिली है।

जीनव वृत और व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय:

चन्द्रकुमार अगरवाला का जमं सन् 1869 ई. को असम के शोनितपुर जिले में हुआ। उनके पिता का नाम हरिविलास अगरवाला था। वे एक असमीया साहित्य के प्रकाशक और पृष्ठपोषक थे किस कारण चन्द्रकुमार को जोनाकी पत्रिका का

प्रकाशन करने में आर्थिक सुविधा प्राप्त हुई। 25 अगस्त सन् 1885 ई. को जब वे कलकत्ता में अध्ययन कर रहे थे उसी समय असमीया भाषा उन्निति साधिनी सभा का जंम होता है। इस सभा को गठन करने में जिस छात्र दल का योगदान था उनमें से चन्द्रकुमार प्रमुख थे। कुछ वर्षों के पश्चात् सन् 1889 में चन्द्रकुमार के सम्पादन में सभा के मुखपत्र (घोषणा) पत्र के स्वरुप जनवरी महीने में जोनाकी पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसके प्रकाशन के साथ असमीया साहित्य में 'रेनेसा' की प्रतिष्ठा होती है। जोनाकी पत्रिका के माध्यम से चन्द्रकुमार, लक्ष्मीनाथ और हेमचन्द्र इन तीनों छात्रों के शक्तिशाली नेतृत्व में असमीया साहित्य में एक युग का प्रारम्भ होता है। इन त्रिमुतियों में से चन्द्रकुमार ने ही रोमान्टिक कविता के ज्वार को असमीया साहित्य में प्रवाहित किया। और जोनाकी पत्रिका की परिलक्पना, प्रकाशन के लिए आर्थिक सहयता और सम्पादन के माध्यम से पत्रकारिता में प्रवेश किया। चन्द्रकुमार, हेमचन्द्र गोस्वामी और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा के साथ मिलकर सन् 1889 ई. में जोनाकी पत्रिका प्रकाशन किया। इस पत्रिका के प्रथम प्रकाशक चन्द्रकुमार ही थे। सन् 1918 ई. में अगरवाला ने सप्ताहिक अखबार असमीया का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। उसके पश्चात् यह पत्र सप्ताह के तीन दिन के अन्तराल में एक दैनिक असमीया के रुप में प्रकाशन होने लगा था। सन् 1977 ई. में गौहाटी में अपने निवास स्थान पर चन्द्रकुमार अगरवाला का निधन होता है।

चन्द्रकुमार अगरवाला और उनकी काव्य प्रतिभा:

चन्द्रकुमार अगरवाला को असमीया रोमांटिक साहित्य के प्रवर्तक एवं प्रधान कवि है। इनके करकमलो के द्वारा ही असमीया साहित्य में रोमांटिक काव्यधारा की प्रतिष्ठा हुई। आलोचक अगरवाला जी को असमीया साहित्य में रोमान्टिक भाव धारा को प्रवाहित करने का श्रेय प्रदान करते है। अगरवाला जी रोमान्टिक साहित्य के एक सफल कवि है। जोनाकी पत्रिका (सन् 1889 ई.) में उनकी सर्वप्रथम कविता 'बनकुँवरी' नाम से प्रकाशित हुई और प्रकृत अर्थ में इस कविता से ही असमीया साहित्य में रोमान्टिक युग की सूचना मिलती है। अगरवाला जी की साहित्यिक रचनाओं की रुपरेखा अति संक्षिप्त है उन्होंने मात्र दो ही काव्य संकलन है। 'प्रतिमा' चन्द्रकुमार अगरवाला की प्रथम काव्य संकलन है और दूसरी 'बीनबरागी'। 'प्रतिमा' का प्रकाशन सन् 1913 में और 'बीनबरागी' का प्रकाशन सन् 1927 में हुआ। अगरवाला की कवितायें रोमान्टिक या स्वच्छन्दता की विचार धारा से युक्त मानी जाती है। उनकी कवितायें रोमान्टिक के समस्त लक्षणों से भी अभिप्रेत है।

असमीया रोमांटिक साहित्य मूल रुप से जोनाकी पर ही केन्द्रित है। इसी के प्रकाशन ने एक नवीनता का संकेत दिया। जोनाकी पत्रिका के प्रकाशन से लेकर द्वितीय विश्वयुद्ध तक लगभग अर्द्ध शताब्दी काल असमीया साहित्य में रोमान्टिक काव्य धारा को प्रवाहित करने में जोनाकी पत्रिका की महतवपूर्ण भूमिका रही है। इस युग में कई और पत्रिकाओं का सम्पादन हुआ जैसे- बिजुली, उषा, बाँही, चेतना मिलन और आवाहान आदि। जोनाकी के पश्चात् बाँही और आवाहान की भूमिका महत्वपूर्ण रहा है।

जोनाकी और बाँही में लगातार चन्द्रकुमार की कविताये प्रकाशित होने लगी थी। उनकी कविताओं का प्रथम संकलन 'प्रतिमा' नाम से सन् 1913 ई. और द्वितीय संकलन 'बीनबरागी' नाम से सन् 1923 ई. में प्रकाशित हुई। इन दोनों काव्य संकलनों के प्रकाशन के बाद चन्द्रकुमार सुप्रतिष्ठित कवि के रुप में परिचित होने लगे। प्रथम काव्य संकलन में जोनाकी में प्रकाशित कविताओं को स्थान मिला और द्वितीय संकलन में बाँही में प्रकाशित कविताओं को स्थान मिला। 'प्रतिमा' और 'बीनबरागी' के प्रकाशन के बाद चन्द्रकुमार के एक प्रतिष्ठित कवि का दर्जा मिलने लगा। 'प्रतिमा' में संकलित मुट्ठी भर कविताओं ने अगरवाला को एक कवि व्यक्तित्व के रुप में प्रतिष्ठित कर दिया। लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने उनकी कविताओं के विषय में यह कहाँ है कि 'प्रतिमाखनि खरु किनु निभाज सोनर।' अर्थात् प्रतिमा आकार में छोटी है किन्तु पूर्ण रुप से कंचन है। चन्द्रकुमार ने लगभाग अस्सी कविताओं की रचना की है। संख्याओं में कम होते हुये भी उनकी कविताओं का भाव बड़े ही गम्भीर तथा दूसरो को भी प्रवाभित करने की उसमें अपार क्षमता है। जिस प्रकार अंग्रेजी के कवि कीट्स ने कम कविताओं की रचना करके भी उच्च स्थान को प्राप्त किया है। ठीक इसी प्रकार चन्द्रकुमार ने भी कम कविताओं की रचना कर असमीया रोमांटिक काव्य धारा के क्षेष्ठ कवि और युग प्रवर्तक के रुप में ख्याति प्राप्त किया है।

चन्द्रकुमार अगरवाला की कविताओं में प्रकृति प्रेम और मानव प्रेम सुन्दर रुप से प्रकाशित एवं अभिव्यक्त हुआ है। उनकी कविताओं को प्रायः दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है जैसे- 1. प्रकृति परक कविता और 2. मानवतावादी दृष्टिकोण से अभिप्रेरित कविता। दरअसल चन्द्रकुमार अगरवाला मानवतावादी कवि है। कभी-कभी उनकी मानव प्रेम कविता विश्व प्रेम में परिणत होते हुये अति नौसर्गिक स्तर तक पहुँचा हुआ भी दिखाई पड़ाता है। अगरवाला की कविताओं की नौसर्गिक सौन्दर्य के वर्णनों के मध्य अति प्राकृतिक रुप में प्रस्फुटित .हुआ है। बनकुँवरी (अर्थात् वन की परी), जलकुँवरी (अर्थात् जलपरी) आदि कविताओं के इस लक्षण को देखा गया है। बीन बरागी, तेजीमला, आदि कई कविताओं की मानवतावादी दृष्टि अति मानवीय स्तर की गति को प्राप्त किया है। अस्सी के अंतिम दशक के अंग्रेजी साहित्यकारों के एक दल ने रोमान्टिक वाद का प्रारम्भ किया। 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में कलकत्ता को कॉलेजों में अध्ययनरत असम के छात्रकवियों ने अंग्रेजी साहित्य के कीट्स, वर्ड्सवर्ड, कालरिज, शैली, अनेल्र्ड आदि रोंमान्टिक कवियों के कविताओं का अध्ययन किया और वही दूसरी करफ बंगाली काव्य के साहित्य के आदर्शो का स्पर्श किया था। अंग्रेजी की कविताओं की व्यक्ति केन्द्रित भाववस्तु, अनुभूति और परिस्थिति को केन्द्रित कर रचित कवितायें एक नवीन युग की भावधारा को स्थापित कर रही थी। चन्द्रकुमार ने उनके इस आदर्श को ग्रहण कर एक विचित्रमय अनुभूति के जगत में प्रवेश करने लगे। वे अपनी कविताओं के माध्यम से कल्पना भाव को शिल्पानुभूति की प्रकाश फैलाने में सक्ष्म सिद्ध हुये। चन्द्रकुमार की कविताओं में प्रकृति-प्रेम, प्राणियों के प्रति उदार मानवाता की भावना, काल्पनिकता, मुक्ति की चिन्ता, रुप-अरुप का दर्शन, प्रेम और सौन्दर्य की उपासना, विश्व-प्रकृति का रमणीय दर्शन, इंन्द्रियता आदि परिलक्षित होने लगा। अपनी कविताओं में रहस्य का उद्घाटन करने के लिए इन तत्वों को विशेषताओं में सम्मिलित करने लगे। यह कहाँ जा सकता उक्त सारे तत्व उनकी कविताओं की विशेषतायें है। रोमान्टिक के सारे लक्षण उनकी कविताओं में पाया जाता है।

चन्द्रकुमार अगरवाला के प्रथम काव्य संकलन प्रतिमा (अर्थात् मुर्ति) में 48 (अरटालिस) छोटी कविताओं को संकलित किया गया है। उनकी कविताओं में प्रकृति के विचित्र रुप, अति प्राकृतिक वर्णन, मानवीय अनुभुति की तीव्रता आदि का चित्रण प्रकाशित हुआ है। तेजीमला कविता में प्रकृति का सुन्दर चित्रण और मानवमूल्य का निर्धारण व्यवस्थित रुप में घटित हुआ है। बनकुँवरी, जलकुँवरी, प्रकृति, नियर, जोनाकी आदि कविताओं में प्रकृति का रमणीय एवं मन मोहक चित्रण हुआ है। मनव-वन्दना, विश्व भातृत्व सुख, किशोरी, माधुरी, फूला, खरियह (सरसों) अकलखरीया (अर्थात् एकांकी पन) चिरलगरीया (जीवन साथी), जीवनर लगरीया (जीवन के बन्धु) आदि कविताओं में मानवीय गुणों का समावेश हुआ हैं। चन्द्रकुमार अगरवाला की कविताओं में प्रकृति का रमणीय चित्रण परिलक्षित होता है। लता, नदी, पाहाड़-पर्वत, सूर्य-चन्द्र, उषा, आकाश, आदि सभी प्रकृति के विविध उपादानों को सम्मिलित कर प्राकृतिक और अप्राकृतिक सौन्दर्य को उद्घाटित कर अपनी कवि प्रतिभा का परिचय दिया है। अगरवाला का प्रकृति चित्रण विश्व के प्रकृति का प्राणमयी और रहस्यमयी प्रकाश कहाँ जा सकता

है। जिस प्रकार बनकुँवरी और जलकुँवरी में प्रकृति का रहस्यमय वर्णन हुआ है ठीक इसी प्रकार नियर कविता में सरल-सहज वर्णनों के द्वारा प्रकृति अति प्राणमयी हो उठी है। गीत कविता के दृष्टिकोण से अगरवाला के कविताओं की व्यंजना अति मधुर है। .

बनकुँवरी कविता में रहस्यात्मकाता की अभिव्यक्ति स्पष्ट परिलक्षित हुआ है। प्रकृति के उच्छवास पूर्ण वर्णनों के मध्य अलौकिक रहस्यात्मकता की अभिव्यक्ति पूर्ण रुप से इस कविता में हुआ है। बनकुँवरी कविता शरीर विहिन रुप में अंकन हुआ है। कवि ने प्रकृति के सौन्दर्य के वर्णन में अपनी नीजि अनुभूति की तीव्रता को भी व्यक्त किया है। भरी दोपहरी की अनुभिति के द्वारा एक विजन वन की गम्भीर चित्र को वर्णित किया है। जब हवाओं के झोको से लताये पड़ो को लिपट कर स्नेह युक्त चुम्बन देती है। पत्ते की आड़ में छिपा कपौ (orchid) शर्म से गीता गाती है जिसके फलस्वरुप पेड़ नदी का ओर देखकर हँसता है। और कल-कल की सुरो से नदी बहती जाती है। इस तरह के एक परिवेश में विपिन के मध्य तोमाल, लेटुकु (एक फल विशेष का नाम) बकुल (एक फुल विशेष का नाम), आदि के बगीचे की कल्पनायें कवि के अतित की स्मृतियों को स्पर्श करता है। उस स्थान पर अभी कोई मनुष्य नही है, सिर्फ यक्षिणी कल्पनायें ही आवा-गमन करती है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानों ये सभी दलबध होकर बनफूल (वन के फूलों से बनी माला) पहन कर वट (वट वृक्ष) के नीचे टूक-टूक कर तालियाँ बजाते हुये घूम-घूम कर नाम-कीर्तन गा-गा कर नाच रहे हो-

निजन दुपरीया खुहुरीटि मारि
माटिले नो कोने काक ?
बिजन बनत कोने कत आछे
हालिछे गछर आग।[3]

चिन एई भेटि तोमाल लेटुकु
हल बहु दिन हल।
बाहर छयात गजालि गाजिसे
कोने नो इयात फूरे ?
जुर-जुर करि बताह बलिछे
बाँहर माजे-माजे घुरे।
पाते-पाते किबा फूच-फूचाइछे
मारिछे मिचिकि हांहि ?[4] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् सुने दोपहर में चीटी बजाकर, किसने किसको बुलाया है, एकांत वन में कौन कहाँ पर है, पेड़ो की डालियाँ भी हिल रहे है। प्रकृति का प्रतीक स्वरुप है ये ताम्बुल (सुपारी) और लेटुकु (फल) आदि। कवि कहते है कि बाँसों के झुरमुटों में छाये में उसके छोटे-छोटे पौधे निकल आये हैं। कवि प्रश्न करते हुये करते कहता है कि कौन इन सब जगहों में घुमा फिरता है। बाँसों के झुरमुटों के बीज जुर-जुर की ध्वनि करते हुये हवायें बह रही है। कुछ पत्तों के बीज में फूस-फूसा भी रहा है, और कौई मंद-मंद मुस्कुरा भी रहा है।

रुपहीन मेल देवयोनिर खेल
मानुहे नेदेखा मुख।[5] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् यह मिलन रुपहीन है और यह देवयोनियों का खेल है और मनुष्य इसके रुप को या स्वरुप को देख नही सकता।

इनमें से कोई कपौ (पक्षी) चिड़ियों के घौसले तक उड़ कर चुम्बन देती है कोई अपने सिर पर तितली धारण करती है और कोई फूलो का मधु चुस कर विविध प्रकार के सौन्दर्य को फैलाती है मनुष्य ऐसे सौन्दर्य की उपल्बधि कर अपने मन में शांति अनुभव करता है।

कि देखिछ सौ श्यामल पाटीत
छायात वा किनो चाम-
नाव चूलि मेलाईछे कोनेनो वा
मुखनि उज्जल श्याम [6] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् बनकुँवरी प्रकृति के श्यामल पट पर नाले वर्ण के बालों को फैला कर उज्जवल श्याम वर्ण के मुख के साथ जलदेवी नियरी (ओस) के साथ बैठी हुई है। इस प्रकार की कल्पनायें रोमांटिक के लक्षण परिलक्षित होता है।

चन्द्रकुमार अगरवाला की बनकुँवरी और जलकुँवरी समान स्तर की कविता है। जलकुँवरी कविता को कवि ने पारम्परिक रुप से वर्णन नकर एक रहस्य मय और शरीर विहिन रुप मे प्रकृति का अंकन किया है। अतिन्द्रिय कल्पनाओं में वशीभूत होकर इसका चित्रण किया गया है। चन्द्रकुमार ने अपनी कविताओं में प्रभात के आगमण का भी सुन्दर वर्णन किया है। कवि कहते है कि –

रंगा हात भरि रंगा मुखखनि
कांचन उजला चूलि।
नासिछे आटाई दिगमबरी बाला
गाईछे प्रभाति बुलि।[7] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् कवि प्रातः बोला का वर्णन कहते हुये कहतो है कि उसका हाथ लाल है और मुख भी लाल है, उसके कंचन की भाँति उसे केश है, प्रातः बेला के आगमन के गीत गा कर नाच रहे सारे दिगम्बरी बालायें।

सुबह जलकुँवरी के गोद में हंसों के झुंड आनन्द में मशगुल है केतकी पक्षी दिन का आगाज देने के बाद किसी अन्य पक्षी ने भी मृदु स्वर में उसका समर्थन दिया है। कूँवली (कोहरा) का वेश धारणकर पूर्व दिशा में उदित उषा देवी के साथ सम्मिलित होती है। धीरे-धीरे कर सुर्य की उज्जवल किरणे विखरने के कारण कोहरा हट सा गया है।

सुन्दर पूवत उषादेवी सते
मिलिल कूवरी गई
मिलन हाहिरे उजालि चौदिश
लूकाल पोहरमयी।[8] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

ऐसे परिवेश में प्रकृति में आनन्द की लहर उठने लगती है और सूर्य अपनी स्वर्ण किरणों रुपी रोशनी से प्राणी जगत् को आन्दित करता है। जलकुँवरी कविता में रात्रि की अंतिम पहर से ले कर सूर्य उदित होने तक एक मनोरम सुबह का चित्र अंकित किया है। इसमे जलकुँवरी रहस्यमय होकर कुवली के रुप में अपने को दर्शन कराया है। इसके बाबजूद लौकिकता में औलोकिक सौन्दर्य का प्रतिफलित हुआ है। जवकुँवरी कविता का वर्णन सुन्दर और उसकी चित्रकल्पना बहुत ही मधुर है।

अगरवाला ने अपनी कविताओं में मानवीकरण के द्वारा प्रकृति के विविध रुपों को मानवीय गुण प्रदान कर प्रकृति में सजीवता का आरोपण किया है कि अपनी इच्छाओं भावनाओं को प्रकृति के विविध क्रिया व्यापारों द्वारा अभिव्यक्ति देनी का प्रयास किया है।

कवि चन्द्रकुमार अगरवाला नें एक नवीन दृष्टिकोण के द्वारा 'तेजीमला' कविता को वर्णित करने का प्रयास किया है। कवि ने इस कविता में सामाजित विषमता की ओर इशारा किया है। परिवार मनुष्य का ही बनाया हुआ हैं और मनुष्य ही इसे तोड़ता है। इस समाज और परिवार में किसे अपना माना जाय। तेजिमला एक कुवारी लड़की है उसने परिवार के किये गये प्रताड़नाओं को सहा है। वे अपनी

कविता में कहते है कि- मनुष्यों ने परिवर को दरकिनार कर दिया। वह सर्फ अपना ही सोचता है।

मानूह कूटुमे दलियाई पेलाले
काकनो कूटुम पालि ?[9] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

तेजीमला एक बुहुत ही सीधी-साधी कुँवारी है, मन की व्याथाओं के द्वारा सभी को लेने की समर्पण रखती है। लेकिन इसे मानव के कूटुम नहीं पहचान सकी-

मानुहर चोतालत माधुरी फुटिले,
मानुहे निचिनि हाय !
खारि तुलि छिङि मोहारि पेलाले
मानहर मरमो नाई।[10] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

अर्थात् कवि कहते है कि लोगो के घर के आंगन में माधुरी (एक फुल विशेष का नाम) खिलने लगा है लेकिन उसकी कोई कद्र नहीं करना जानता। खारि तुलि अर्थात् झारु लगा करके आंगन को साफ कर देता है। मनुष्यों के मन में अब कोई स्नेह नहीं रह गया है। लोगो को अब फुलों से कोई मोह नहीं रह गया है।

कवि के लिए तेजीमला कविता एक पारिजात पुष्प की भाँति है। तेजिमला कविता में कवि ने प्रकृति के माध्यम से हमारी सामाजिक विषमता और हमारी दृष्टि को परिभाषित करने का प्रयास किया है। कवि ने अपनी मानवीय अनुभूति को प्रकृति के द्वारा चित्रित करने का प्रयास किया है। तेजीमला एक गाथात्मक कविता है। कवि ने इस कविता की रचना कर असमीया लोकजीवन की गहराई तक प्रवेश किया है।

अगरवाला ने अपनी कविताओं में सत्य और सौन्दर्य में कोई भेद नहीं माना है। वे अपनी कविता में मानव वन्दना में मानव को ही देवता, मानव को ही सत्य, मानव को छोड़कर और कोई नहीं है। मानव की नीच प्रवृत्ति, स्वार्थपरता से वे खीझते है, लेकिन फिर भी उनको मानव पर से आस्था नहीं हटी है। मानव अपनी महानता के बल पर देवत्व के स्थान को प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार की आत्मीय विश्वास उनकी कविता में अभिव्यक्त हुआ है।

आहिछे मानुह गइछे मानुह
मानुह मायापी जीव।
मानुह सोंतर अंत नाइकिया
बुलिले मरत किय ?
मानवी जन्म दिया उटुवाइ
मानवी करम सोंते
मानुहर मरम बुजिबा मानुहे
धरम जे मरमते।
मानुहेइ परात्पर,
एइ जे पृथिवी स्वर्गतों अधिक,
मानुहर निजापी घर।
मानुहेइ देव मानुहेइ सेव
मानुह बिने नाइ केव।
कराँ कराँ पूजा पाद्य अर्घ्य लइ-
जय जय मानव देव।[11] (हिन्दी लिप्यान्तरण)

कवि मानव की वन्दना करते हुये कहते है कि संसार में हमने ईश्वर को कभी नहीं देखा हैं लेकिन मनुष्यों की सत्ता सर्वत्र विद्यमान है। कवि मनुष्य सत्ता एवं समाज पर विचार करता हुये कहना चाहता है कि मनुष्य का ही इस संसार में आना जाना लगा हुआ है। अनन्त काल से मनुष्य ही इस संसार में विद्यमान है उसके अलावा और कोई दूसरा इस जगत् में माया से युक्त नहीं है। इस धरती पर उनके आने की जो अनन्त धारा है वह कभी न समाप्त होने वाला है। मानवीय जीवन को कवि समाज के लिए उत्सर्ग कर देने की बात करता है। कवि कहते है कि मनुष्य ही अपने कर्मों के द्वारा संसार को अपने उपस्थिति का बोध करता है। मनुष्य ही मनुष्य के प्रेम को समझता है। प्रेम ही मनुष्य का धर्म है, इसके अवाला ओर कोई दूसरी बड़ा धर्म है। मानवीय गुण ही मनुष्य के लिए सबसे अविवार्य तत्व है। कवि कहते है कि इस जगत में मनुष्य ही सर्वोपरी है वही सर्व श्रेष्ठ कहलाने का अधिकारी है। यह पृथ्वी स्वर्ग से श्रेष्ठ है उसके आगे सब कुछ छोटा है। यह धरती मनुष्य के लिए पूर्ण रुप अपना है। इस संसार में अगर किसी की वन्दना की जानी चाहिए तो वह सिर्फ मनुष्य की जानी चाहिए। मनुष्य ही मनष्यमात्र का सच्चा सेवक सच्चा मित्र है। कवि बल पूर्वक यह कहना चाहते है कि मनुष्य ही इस जगत का उद्धार कर्ता, पालन करता है। इसीलिए अर्घ्य लेकर उसकी ही पूजा की जाना चाहिए।

कवि चन्द्रकुमार यह बताना चाहता है कि मनुष्य ही अपने कर्मों के द्वारा देवत्व को प्राप्त कर सकता है । रोमान्टिक युग के इस कवि व्यक्तिगत अनुभुतियो को सामुहिक हित में उपयोग किये जाने की बात करता है।

उपसंहार:

असमीया साहित्य के स्वच्छन्दतावाद 12 के कवियों ने भी अपनी कविताओं में अपनी कविताओं में प्रकृति के साथ-साथ अपनी मानवीय अनुभूतियों को प्रकाशित करने का प्रयास किया है । असमीया साहित्य का रोमान्टिक युग को रमन्यास युग कहाँ गया । जिसे हिन्दी में छायावाद युग का नाम दिया गया । नामकरण में अन्तर को अनुभव किया जा सकता है लेकिन कवियों की कविताओं में अभिव्यक्त चेतना, शिल्प, कला भाव आदि सभी कुछ साम्य धरातल पर प्रतिष्ठित है। प्रान्त चाहे अलग-अलग हो लेकिन हमारी जमीना हकीक़त एक है। अगरवाल जी की जिन कविताओं में लिया गया उन सभी कविताओं में प्रकृति के तत्व विद्यमान हैं। कवि ने अपनी चेतना के धरातल से असमीया साहित्य को एक नयी दिशा दिखाने का प्रयास किया । इसीलिए चन्द्रकुमार अगरवाला को आलोचक असमीया साहित्य के रोमान्टिक युग के प्रवर्तक कवि के रुप में स्वीकार करते है।

पादटीका:

1. सन् 1889 ई. में प्रकाशित असमीया पत्रिका है। जो छः वर्षों के प्रकाशन के बाद बन्द हो गया। फिर सन् 1901 में पुनः प्रकाशित हुआ। इस पत्रिका के प्रथम सम्पादक चन्द्रकुमार अगरवाला थे । जिसे असमीया रोमान्टिक काव्य धारा के प्रवर्तक होने का श्रेय जाता है।
2. Romanticism (also the Romantic era or the Romantic period) was an artistic literary, and intellectual movement that originated in Europe towards the end of the 18 th century and in the most areas was at its peak in approximate period from 1800 to 1850. It was partly a reaction to the Industrial Revolution, the aristocratic social and political norms of the Age of Enlightenment, and the scientific rationalization of nature. Romanticism- Wikipedia, the free encyclopedia online (Google search).
3. बनकुँवरी (कविता), चन्द्रकुमारर कविता समग्र, सम्पादक, नगेन सइकीया, प्रकाशक- बनलता (शाखा), गुवाहाटी, पृष्ठ संख्या- 43-47.
4. वहीं, पृष्ठ संख्या- 43-47.
5. वहीं, पृष्ठ संख्या- 43-47.
6. जलकुँवरी (कविता), वहीं, पृष्ठ संख्या- 52-55.
7. वहीं, पृष्ठ संख्या- 52-565.
8. वहीं, पृष्ठ संख्या- 52-55.

9. तेजीमला (कविता), पष्ठ संख्या- 56-58.
10. वहीं, पृष्ठ संख्या- 56-58.
11. मानव वन्दना (कविता), चन्द्रकुमारर कविता समग्र, सम्पादक, नगेन सइकीया, प्रकाशक- बनलता (शाखा), गुवाहाटी, पृष्ठ संख्या- 40.
12. स्वच्छन्दतावाद रोंमान्टसिज्म का ही हिन्दी अनुवाद है। हिन्दी में इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कदाचित् पं. रामचन्द्र शुक्ल ने अपने ग्रंथ हिन्दी साहित्य का इतिहास में पं श्रीधर पाठक को स्वच्छदतावाद का प्रवर्तक मानते हुये किया। रोमान्टुसिज्म शब्द की वयुत्पत्ति रोमांटिक विशेषण से हुई है, जिसके प्राचीन फ्रांसीसी भाषा में Romantsch-Rumontsch, Romance, Romanz) आदि स्वरुप पाये जाते है । स्वच्छन्दतावाद, पाश्चात्य काव्यशास्त्रः अधुनातन सन्दर्भ, डॉ. सत्देव मिश्र, प्रकाशक- लोकभारती 15-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहावाद-01, पृष्ठ संख्या- 317.

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. शइकिया, नगेन, सम्पादक, चन्द्रकुमारर कविता समग्र, संस्करण-1998, प्रकाशक- बनलता (शाखा), गुवाहाटी- 1.
2. हजारिका, ज्योतिरेखा, सम्पादक, चन्द्रकुमार अगरवालार बीन-बरागी, संस्करण- 2005, प्रकाशक- बनलता (शाखा), गुवाहाटी- 1.
3. शर्मा, डॉ. सत्येन्द्रनाथ, लखेक, असमीया साहित्यर समाक्षात्मक इतिवृति, (नवम संस्करण 2001), प्रकाशक- प्रतिमा देवी, रिहाबारी, गुवाहाटी- 8, असम।
4. बोरा, डॉ. हेम, लेखक, रमन्यासवादः असमीया कविता आरु कुरिजन प्रधान कवि, प्रथम संस्करण 2013), प्रकाशक- श्री अजय कुमार दत्त, स्टुडेन्ट स्टोर, कलेज होस्टेल रोड, गुवाहाटी-01,असम।
5. बरुवा, हेमचन्द्र, लेखक, हेमकोष, (प्रथम संस्करण 1900, और चोदहवीं संस्करण 2011) प्रकाशक- दिवानन्दा बरुवा, हेमकोश प्रकाशन, एम. आर. दीवान पथ, चान्दमारी, गुवाहाटी- 03, असम।
6. शइकीया, नगेन, सम्पादक, बेजबरुवा ग्रन्थावली, (प्रथम और तृतीय खण्ड), संस्करण-2010, प्रकाशक- बनलता, जसवन्त रोड, पानबजार, गौहाटी-01, असम।